CBSE Class 12 हिंदी कोर
Sample Paper 02 (2019-20)

Maximum Marks: 80
Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न पत्र में तीन खंड हैं - क, ख, ग।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- दो अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।
- चार अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए।
- पाँच अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 120-150 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (12)**
   लोकतंत्र के तीनो पायों-विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का अपना-अपना महत्त्व है, किंतु जब प्रथम दो अपने मार्ग या उद्देश्य के प्रति शिथिल होती है या संविधान के दिशा-निर्देशों की अवहेलना होती है, तो न्यायपालिका का विशेष महत्त्व हो जाता है। न्यायपालिका ही है, जो हमें आईना दिखाती है, किंतु आईना तभी उपयोगी होता है जब उसमें दिखाई देने वाले चेहरे की विद्रूपता को सुधारने का प्रयास हो। सर्वोच्च न्यायालय के अनेक जनहितकारी निर्णयों को कुछ लोगो ने न्यायपालिका की अतिसक्रियता माना, पर जनता को लगा कि न्यायालय सही है। राजनीतिक चश्मे से देखने पर भ्रम की स्थिति हो सकती है।
   प्रश्न यह है कि जब संविधान की सत्ता सर्वोपरि है, तो उसके अनुपालन में शिथिलता क्यों होती है? राजनीतिक दलगत स्वार्थ या निजी हित आड़े आ जाता है और यही भ्रष्टाचार को जन्म देता है। हम कसमें खाते हैं और जनकल्याण की ओर कदम उठाते हैं, आत्मकल्याण के ऐसे तत्त्वो से देश को, समाज को सदा खतरा रहेगा। अतः जब कभी कोई न्यायालय ऐसे फैसले देता है, जो समाज कल्याण के हों और राजनीतिक ठेकेदारों को उनकी औकात बताते हों, तो जनता को उसमें आशा की किरण दिखाई देती है। अन्यथा तो वह अंधकार मे जीने को विवश है ही।

   i. गंद्याश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)

ii. उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए- विद्रूपता (1)

iii. लोकतंत्र में न्यायपालिका कब विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हो जाती है और क्यो? (2)

iv. आईना दिखाने का क्या तात्पर्य है और न्यायपालिका कैसे आईना दिखाती है? (2)

v. 'चेहरे की विद्रूपता' से क्या तात्पर्य है और यह संकेत किनके प्रति किया गया है? (2)

vi. भ्रष्टाचार का जन्म कब और कैसे होता है? (2)

vii. जनता को आशा की किरण कहाँ और क्यों दिखाई देती हैं? (2)

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (1×4)**

पैदा करती कलम विचारों के जलते अँगारे,
और प्रज्वलित प्राण देश क्या कभी मरेगा मारे?
लहू गर्म करने को रखो मन में ज्वलित विचार,
हिंस्र जीव से बचने को चाहिए किंतु तलवार।
एक भेद है और जहाँ निर्भय होते नर-नारी
कलम उगलती आग, जहाँ अक्षर बनते चिंगारी
जहाँ मनुष्यों के भीतर हरदम जलते हैं शोले,
बातों में बिजली होती, होते दिमाग में गोले।
जहाँ लोग पालते लहू में हालाहल की धार
क्या चिंता यदि वहाँ हाथ में हुई नहीं तलवार?

i. कलम किस बात की प्रतीक है?

ii. तलवार की आवश्यकता कहाँ पड़ती है?

iii. लहू को गर्म करने से कवि का क्या आशय है?

iv. कैसे व्यक्ति को तलवार की आवश्यकता नहीं होती?

Section B

3. **प्राकृतिक आपदाएँ** विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

परहित सरिस धर्म नहिं भाई विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

OR

आज की बचत कल का सुख विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

4. किसी पर्यटन स्थल के होटल के प्रबंधक को निर्धारित तिथियों पर होटल के दो कमरे आरक्षित करने का अनुरोध करते हुए पत्र लिखिए। पत्र में उन्हें कारण भी बताइए कि आपने वही होटल क्यों चुना।

OR

निकट के शहर से आपके गाँव तक की सड़क का रख-रखाव संतोषजनक नहीं है। मुख्य अभियंता, लोक-निर्माण विभाग को एक पत्र लिखकर तुरंत कार्यवाही का अनुरोध कीजिए। समस्या के निदान के लिए एक सुझाव भी दीजिए।

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:

   a. समाचार के छः 'ककार' कौन-कौन से हैं?

   b. अंशकालिक पत्रकार से आप क्या समझते हैं?

   c. इंटरनेट पत्रकारिता क्या है?

   d. ऐडवोकेसी पत्रकारिता क्या है?

   e. खोजपरक पत्रकारिता किसे कहा जाता है?

6. महँगाई विषय पर एक आलेख लिखिए।

OR

भीड़ भरी बस के अनुभव पर एक फीचर लिखिए।

OR

समाचार लेखन की प्रक्रिया में उल्टा पिरामिड सिद्धांत क्या है?

Section C

7. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×3=6)**

मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ,
मै निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ,
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता,
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ!
मै जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुःख दोनो में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव मौजों पर मुस्त बहा करता हूँ!

   i. आशय स्पष्ट कीजिए-

"है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।"

ii. कवि के हृदय में कैसी अग्नि दहक रही है?

iii. कवि संसार रूपी सागर से पार उतरने के लिए क्या करता है?

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×3=6)

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहै एक-एकन सों 'कहाँ जाई, का करी?'
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत,
साँकरे सबै पै, राम! रावरें कृपा करी
दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु!
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी।

i. प्रकृति और शासन की विषमता के कारणों का उल्लेख कीजिए।

ii. तुलसीदास को इस दुरावस्था में किसका भरोसा है और क्यों?

iii. रावण की तुलना किससे की गई है और क्यों?

8. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (2×4=4)**

सबसे तेज़ बौछारें गई भादों गया
सवेरा हुआ
खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नई चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए

i. शरतकालीन सुबह की उपमा किससे की गई है? क्यों?

ii. मानवीकरण अलंकार किस पंक्ति में प्रयुक्त हुआ है? उसका सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

OR

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2x2=4)

नभ में पाँती-बँधे बगुलों के पंख,
चुराए लिए जाती वे मेरी आँखें।

कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,
तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया।

i. काव्यांश के शिल्प-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।
ii. काव्यांश का भाव-सौंदर्य लिखिए।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:

a. कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं? (कविता के बहाने)

b. सूर्योदय से पहले आकाश में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं? **उषा** कविता के आधार पर बताइए।

c. फ़िराक गोरखपुरी की रुबाइयों से उभरने वाले वात्सल्य के किन्हीं दो चित्रो को अपने शब्दों में चित्रित कीजिए।

10. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (2×3=6)**

हम आज देश के लिए करते क्या है? माँगे हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी है पर त्याग का कही नामों-निशान नही है। अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें करते है पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं? काले मेघा दल-के-दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी-की-फूटी रह जाती है, बैल पियासे-के-पियासे रह जाते हैं? आखिर कब बदलेगी यह स्थिति?

i. "हम आज देश के लिए करते क्या हैं" कथन के द्वारा लेखक देशवासियों को किस बात की याद दिला रहा है? उस बात को हम पूरा क्यों नहीं कर पा रहे हैं?
ii. हमारा एकमात्र लक्ष्य स्वार्थ ही क्यों रह गया है?
iii. लेखक हमें अपने स्तर पर क्या जाँचने के लिए कह रहा है और क्यों?

OR

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (2×3=6)

मैं सोचता हूँ कि पुराने की यह अधिकार-लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती? जरा और मृत्यु, ये दोनों ही जगत के अतिपरिचित और अतिप्रामाणिक सत्य हैं। तुलसीदास ने अफ़सोस के साथ इनकी सच्चाई पर मुहर लगाई थी- "धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना!"

मैं शिरीष के फूलों को देखकर कहता हूँ कि क्यों नही फलते ही समझ लेते बाबा कि झड़ना निश्चित है। सुनता कौन है? महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं, जिनमे प्राण-कण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी है, वे टिक जाते हैं।

दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते है कि जहाँ बने हैं, वहीँ देर तक बने रहे तो काल-देवता की आँख बचा जाएँगे। भोले हैं वे। हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमे कि मरे!

i. शिरीष की किस विशेषता पर लेखक को यह सब कहना पड़ा?
ii. तुलसीदास के कथन का क्या आशय है? उसमें किस सच्चाई को उजागर किया गया है?
iii. "महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं" से लेखक का क्या आशय है?

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)

a. बाज़ार दर्शन निबंध उपभोक्तावाद एवं बाज़ारवाद की अंतर्वस्तु को समझाने में बेजोड़ है।-उदाहरण देकर इस कथन पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

b. लाहौर और अमृतसर के कस्टम अधिकारियों ने सफ़िया के साथ कैसा व्यवहार किया?

c. भक्तिन के आने से लेखिका अपनी असुविधाएँ क्यों छिपाने लगीं?

d. चार्ली चैप्लिन की सावभौमिकता का क्या कारण है?

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:

a. यशोधर पंत की तीन चारित्रिक विशेषताएँ सोदाहरण समझाइए।

b. यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों?

c. पाठशाला पहुँचकर लेखक को किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ा? **जूझ** पाठ के आधार पर बताइए।

d. सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्त्व अधिक था। उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

e. मुअनजोदड़ो की नगर योजना आज की सेक्टर-मार्का कॉलोनियों के नीरस नियोजन की अपेक्षा अधिक रचनात्मक है- टिप्पणी कीजिए।

CBSE Class 12 हिंदी कोर
Sample Paper 02 (2019-20)

Solution

Section A

1. i. शीर्षक- 'जनहित के प्रति सचेत न्यायपालिका'
   ii. विद्रूपता
   'वि'-उपसर्ग, 'ता'-प्रत्यय।
   iii. लोकतंत्र में न्यायपालिका तब विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हो जाती है जब लोकतंत्र के शेष दो स्तंभ अर्थात् विधायिका एवं कार्यपालिका अपने उद्देश्यों से भटक जाते हैं या फिर संविधान के दिशा-निर्देशों की अवहेलना होती है। चूँकि न्यायपालिका बाकी दोनों स्तंभों के अभिभावक के रूप में होती है, तो जब भी उन दोनों में कोई गड़बड़ी होती है तो न्यायपालिका का काम उन्हें सही करना होता है।
   iv. आईना दिखाने का तात्पर्य है-वास्तविकता से परिचित कराना। न्यायपालिका संविधान एवं कानूनों के आधार पर विधायिका एवं कार्यपालिका के व्यवहार को नियंत्रित करके, उसे समाज एवं जनकल्याण के प्रति उत्तरदायी बनाकर उसके कर्तव्यों एवं उद्देश्यों के प्रति सचेत करती है।
   v. 'चेहरे की विद्रूपता' से तात्पर्य है-विकृत चेहरा अर्थात् ऐसा चेहरा जो अपने कृत्यों के कारण भयानक एवं डरावना हो गया हो। यहाँ पर इसका संकेत विधायिका एवं कार्यपालिका से जुड़े ऐसे लोगों की ओर है, जो संविधान के प्रावधानों या दिशा-निर्देशों की अवहेलना करते हैं।
   vi. वास्तव में, भ्रष्टाचार का जन्म हमारी स्वार्थपूर्ण भावनाओं या निजी हितों की पूर्ति करने संबंधी संकीर्ण उद्देश्यों के कारण होता है। संविधान के प्रावधानों तथा कानूनों की अवहेलना करते हुए हम अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति को अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हुए उसे प्राथमिकता देते हैं, तो यहीं से भ्रष्टाचार का जन्म होता है।
   vii. संविधान की सत्ता को सर्वोपरि रखते हुए प्रष्ट राजनीतिक ठेकेदारों के विरुद्ध न्यायपालिका द्वारा की जाने वाली कठोर कार्यवाही जनता में आशा की किरण को जन्म देती है क्योंकि जनता को भ्रष्ट राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था में सुधार की उम्मीद लगने लगती है।
2. i. कवि ने कलम को तलवार के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है। उनका कहना है कि कलम विचारों के अँगारे पैदा कर क्रांति लाती है ।
   ii. तलवार की आवश्यकता हिंसक जीव या पशुओं से बचने के लिए पड़ती है, ताकि उनके हमले से स्वयं को बचाने के लिए तलवार का प्रयोग किया जा सके।
   iii. लहू को गर्म करने से कवि का आशय यह है कि अपने अंदर जोश को बनाए रखना चाहिए, ताकि आवश्यकता पड़ने पर उसका प्रयोग किया जा सके।
   iv. कवि या साहित्यकार को तलवार की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि उनकी कलम तथा विचार ही तलवार का कार्य करते हैं।

Section B

3. **प्राकृतिक आपदाएँ**

प्राकृतिक आपदा को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि यह एक ऐसी प्राकृतिक घटना है जिससे अनेक लोग प्रभावित हों और उनका जीवन खतरे में हो। प्राकृतिक आपदा एक असामान्य प्राकृतिक घटना है, जो कुछ समय के लिए ही आती है, परंतु अपने विनाश के चिह्न लंबे समय के लिए छोड़ जाती है।

प्राकृतिक आपदाएँ अनेक तरह की होती हैं, जैसे-हरिकेन, सुनामी, सूखा, बाढ़, टायफून, बवंडर, चक्रवात आदि, मौसम से संबंधित प्राकृतिक आपदाएँ है। दूसरी ओर भूस्खलन एवं बर्फ की सरकती चट्टानें ऐसी प्राकृतिक आपदाएँ हैं, जिसमें स्थलाकृति परिवर्तित हो जाती है। भूकंप एवं ज्वालामुखी प्लेट विवर्तनिकी के कारण आने वाली प्राकृतिक आपदाएँ हैं। इन प्राकृतिक आपदाओं के पीछे उल्लेखनीय योगदान मानवीय गतिविधियों का भी होता है। मानव अपने विकास कार्यो के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करता है। वैश्विक तापीकरण भी प्राकृतिक आपदा का ही एक रूप है। वस्तुतः जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिक क्रियाकलाप तथा प्रकृति के साथ खिलवाड़ ऐसे मुख्य कारण हैं, जिनके कारण मानव समाज को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है।

प्राकृतिक आपदाओं से बचने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण उपाय यह है कि ऐसी तकनीकों को विकसित किया जाए, जिससे प्राकृतिक आपदाओं की सटीक भविष्यवाणी की जा सके, ताकि समय रहते जान-माल की सुरक्षा संभव हो सके। इसी उद्देश्य के तहत अंतरिक्ष विज्ञान से इस क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता मिली है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक आपदा की स्थिति उपस्थित होने पर किस तरह उससे निपटना चाहिए, इसके लिए आपदा प्रबन्धन सीखना अति आवश्यक है। इस उद्देश्य हेतु एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम होना चाहिए तथा प्रत्येक नागरिक के लिए इसका प्रशिक्षण अनिवार्य होना चाहिए।

OR

परहित सरिस धर्म नहिं भाई

परोपकार से बड़ा इस संसार में कुछ नहीं होता है। इस विषय में गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है कि-

"परहित सरिस धर्म नहिं भाई।

परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।"

अर्थात् परहित (परोपकार) के समान दूसरा कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा (कष्ट) देने के समान कोई अन्य नीचता या नीच कर्म नहीं है। पुराणों में भी कहा गया है, 'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीड़नम्' अर्थात् दूसरों का उपकार करना सबसे बड़ा पुण्य तथा दूसरों को कष्ट पहुँचाना सबसे बड़ा पाप हैं।

परोपकार की भावना से शून्य मनुष्य पशु तुल्य होता है, जो केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति तक ही स्वयं को सीमित रखता है। मनुष्य जीवन बेहतर है क्योंकि मनुष्य के पास विवेक है। उसमें दूसरों की भावनाओं एवं आवश्यकताओं को समझने तथा उसकी पूर्ति करने की समझ है और इस पर भी अगर कोई केवल अपने स्वार्थ को ही देखता हो, तो वाकई वो मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है।

इसी कारण मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। इस दुनिया में महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह, दधीचि ऋषि, अब्राहम लिंकन, मदर टेरेसा,

बाबा आम्टे जैसे अनगिनत महापुरुषों के जीवन का उद्देश्य परोपकार ही था। भारतीय संस्कृति में भी इस तथ्य को रेखांकित किया गया है कि मनुष्य को उस प्रकृति से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिसके कण-कण में परोपकार की भावना व्याप्त है। भारतीय संस्कृति में इसी भावना के कारण पूरी पृथ्वी को एक कुटुंब माना गया है तथा विश्व को परोपकार संबंधी संदेश दिया गया है। इसमें सभी जीवों के सुख की कामना की गई है।

OR

आज की बचत कल का सुख

वर्तमान आय का वह हिस्सा, जो तत्काल व्यय (खर्च) नही किया गया और भविष्य के लिए सुरक्षित कर लिया गया 'बचत' कहलाता है। पैसा सब कुछ नहीं रहा, परंतु इसकी ज़रूरत हमेशा सबको रहती है। आज हर तरफ़ पैसों का बोलबाला है क्योंकि पैसों के बिना कुछ भी नहीं। आज ज़िंदगी और परिवार चलाने के लिए पैसे की ही अहम भूमिका होती है। आज के समय में पैसा कमाना बहुत मुश्किल है । उससे कहीं अधिक कठिन है, पैसे को अपने भविष्य के लिए सुरक्षित बचाकर रखना, क्योंकि अनाप-शनाप खर्च और बढ़ती महँगाई के अनुपात में कमाई के स्रोतों में कमी होती जा रही है इसलिए हमारी आज की बचत ही कल हमारे भविष्य को सुखी और समृद्ध बना सकने में अहम भूमिका निभाएगी। आज के दौर में बचत नहीं करना एक मूर्खतापूर्ण निर्णय साबित होता है।

जीवन में अनेक बार ऐसे अवसर आ जाते हैं, जैसे आकस्मिक दुर्घटनाएँ हो जाती हैं, रोग या अन्य शारीरिक पीड़ाएँ घेर लेती हैं, तब हमें पैसों की बहुत आवश्यकता होती है। यदि पहले से बचत न की गई तो विपत्ति के समय हमें दूसरों के आगे हाथ फैलाने पड़ सकते हैं। कभी-कभी तो पैसों के अभाव में बहुत बड़ा अनर्थ हो जाता है और हम कुछ कर भी नहीं पाते हैं। हमारी आज की छोटी-छोटी बचत या धन निवेश ही हमें भविष्य में आने वाले तमाम खर्चे का मुफ्त समाधान कर देती है। आज की थोड़ी-सी समझदारी आने वाले भविष्य को सुखद बना सकती है। बचत करना एक अच्छी आदत है, जो हमारे वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी लाभदायक सिद्ध होती है। किसी ज़रूरत या आकस्मिक समस्या के आ जाने पर बचाया गया पैसा ही हमारे काम आता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि बचत करके हम अपने भविष्य को सँवार सकते हैं तथा आकस्मिक दुर्घटनाओं और भविष्य की मुसीबतों से बच सकते हैं।

4. सेवा में,
   प्रबंधक महोदय,
   स्पार्क हेवन होटल,
   नैनीताल, उत्तराखंड।
   17 अप्रैल, 2019
   विषय -होटल में कमरे आरक्षित करवाने हेतु।
   महोदय,
   मैं जय प्रकाश, दिल्ली का निवासी हूँ। मैंने आपके होटल की आवभगत के विषय में बहुत प्रशंसा सुनी है। मैं और मेरा परिवार दिनांक 25 अप्रैल, 2019 से 27 अप्रैल, 2019 तक नैनीताल में पर्यटन के उद्देश्य से आ रहे हैं इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप अप्रैल 20, 2019 से 27 अप्रैल 27 , 2019 तक की दिनांक के लिए मेरे नाम से दो कमरे आरक्षित कर दीजिए।

धन्यवाद
भवदीय
जय प्रकाश
दिल्ली

OR

सेवा में
मुख्य अभियंता,
लोक निर्माण विभाग,
दिल्ली।

15 अप्रैल, 2019

विषय - सड़कों के रख-रखाव हेतु।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं गोविन्द प्रसाद, बसई गाँव का निवासी हूँ। निकट के शहर से हमारे गाँव को जो सड़क जोड़ती है ,उसका अभी कुछ ही दिनों पूर्व लोक निर्माण विभाग की ओर से निर्माण करवाया गया था। सड़क का उचित रख-रखाव न करने के कारण सड़क पर दोनों ओर गंदगी फैली रहती है, लोग अपने घर का कूड़ा वहाँ डालने लगे हैं। इसके अतिरिक्त सड़क भी बीच-बीच में कई जगह से टूट गई है,और सड़क पर जगह-जगह गढ्ढे बन गए हैं, जिससे आने-जाने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

अतः महोदय मेरा आपसे अनुरोध है कि सड़क पर कूड़ा डालने वाले लोगों को चेतावनी देकर वहाँ पर कूड़ा न डालने का निर्देश दिया जाए और सड़क को पुनः निर्माण करके उसे उपयोग करने के लायक बनाया जाए।

आशा है कि आप मेरे इस पत्र द्वारा प्राप्त सूचना पर शीघ्रातिशीघ्र कदम उठाएँगे।

धन्यवाद
भवदीय
गोविन्दप्रसाद
बसई गाँव

5. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 15-20 शब्दों में लिखिये:

   a. किसी घटना के संदर्भ में क्या, कहाँ, कब, कैसे, क्यों और कौन समाचार के छ: ककार हैं। सभी समाचार मूलतः इन्हीं प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत करते हैं।

   b. अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय के आधार पर काम करते है। ये एक से

अधिक पत्रों के लिए भी काम करते हैं क्योंकि ये पूर्णकालिक पत्रकार नहीं होते हैं ।

c. इंटरनेट पर समाचारों का प्रकाशन अथवा आदान-प्रदान, इंटरनेट पत्रकारिता कहलाता है।

d. किसी खास विचारधारा या उद्देश्य को आगे बढ़ाने तथा उसके लिए जनमत तैयार करने वाली पत्रकारिता 'एडवोकेसी पत्रकारिता' कहलाती है। भारत में कुछ समाचार-पत्र या टेलीविजन चैनल कुछ खास मुद्दों को लेकर अभियान चलाते हैं। 'जेसिका लाल हत्याकांड' में न्याय के लिए चलाए गए सक्रिय अभियान को उदाहरण के तौर पर लिया जा सकता है ।

e. खोजपरक पत्रकारिता का अर्थ उस पत्रकारिता से है, जिसमें सूचनाओं को सामने लाने के लिए उन तथ्यों की गहराई से छानबीन की जाती है, जिन्हें संबंधित पक्ष द्वारा दबाने या छुपाने का प्रयास किया जा रहा हो।

6. **महँगाई**

महँगाई का अर्थ है-दैनिक उपभोग की वस्तुओं की कीमत का आवश्यकता से अधिक बढ़ना यानी उनमें मूल्यवृद्धि। प्रत्येक देश की सरकार का यह दायित्व है कि वह अपनी जनता की मूलभूत आवश्यकताओं को कम कीमत पर बेहतर गुणवत्ता के साथ पूरा करे। दैनिक उपभोग की वस्तुओं की कीमत इतनी कम हो कि निम्न आय वाला व्यक्ति भी इन्हें सरलता से खरीद सके, परंतु समय-समय पर गलत आर्थिक नीतियों के दुष्परिणामस्वरूप आम जनता को महँगाई का सामना करना पड़ता है।

महँगाई बढ़ने के कई कारण हैं। उन कारणों मे कुछ प्राकृतिक हैं, तो कुछ सामाजिक तथा कुछ राजनीतिक। सूखा, बाढ़, भूकंप, फसलों का खराब हो जाना आदि जहाँ प्राकृतिक कारण हैं, वहीं जमाखोरी, दोषपूर्ण वितरण प्रणाली के साथ-साथ प्रशासन, राजनीतिक दलों की खराब आर्थिक नीतियाँ आदि महँगाई बढ़ाने के प्रमुख गैर-प्राकृतिक कारण हैं। कभी-कभी अचानक थोपे गए युद्ध से भी महँगाई बढ़ जाती है। बाज़ार में वस्तुओं की कमी का फायदा जमाखोर उठाते हैं और आवश्यकता की वस्तुओं को मनमाने दामों पर बेचते हैं। सरकार द्वारा की जाने वाली अनाज की वितरण प्रक्रिया इतनी दोषपूर्ण है कि एक टन अनाज आम जनता तक पहुँचते-पहुँचते आधा या इससे भी कम रह जाता है। टनों अनाज गोदामों या खुले आसमान के नीचे पड़े-पड़े सड़ जाते हैं, और देश के नागरिक भूखे मर रहे होते हैं। यदि हमें बढ़ती महँगाई नियंत्रित करनी है, तो इससे संबंधित व्यापक राष्ट्रीय नीति बनाने की आवश्यकता होगी। वितरण प्रणाली को दोषमुक्त बनाना होगा। आवश्यक वस्तुओं की कीमतों पर सरकारी स्तर पर निगरानी रखी जानी अत्यंत आवश्यक है। महँगाई को नियंत्रण में रखना अत्यंत आवश्यक है, अन्यथा इसके अनेक दुष्परिणाम हो सकते हैं।

OR

भीड़ भरी बस के अनुभव

देश की राजधानी दिल्ली में जनसंख्या में इस कदर वृद्धि हो रही है कि आने वाले वर्षों में लोगों के ऊपर लोग चलकर जाएँगे। हाँ यह सत्य है और इसका प्रत्यक्ष उदाहरण आए दिन दिल्ली की बसो में देखने को मिलता है। बस किसी स्टैंड पर आती है और सवारी पीछे के दरवाज़े से चढ़ती है और इसके बाद सवारी का कोई काम नहीं। वह धक्के खा-खाकर पीछे के दरवाज़े

से कब आगे ड्राइवर के पास तक जा पहुँचती है, यह स्वयं सवारी को भी नहीं पता चलता। भीड़ भरी बस में सफर करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है। बसों में भीड़ जेबकतरों और चोरों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।
भीड़ में कुछ लोग बहुत परेशानी महसूस करते हैं, तो कुछ ऐसे लोग भी हैं जो जेब कतरे, चोर आदि होते हैं। उनके लिए भीड़ भरी बस जेब काटने व चोरी करने के अवसर को बढ़ा देती है। दिनोंदिन बसो में इस तरह की वारदातें होती रहती हैं। भीड़ भरी बस में सफर करना बहुत ही कठिन कार्य है। आगे-पीछे सवारी इस तरह लटक जाती है, जैसे उन्हें अपनी जान की कोई परवाह नहीं। इनमें खासतौर पर स्कूली छात्रों की संख्या अधिक होती है।और भीड़ भरी बसों में बुजुर्गों,महिलाओं और छात्रों को अधिक परेशानी होती है। भीड़ भरी बस में सबसे बड़ी समस्या टिकट लेने में आती है।
जब कोई सवारी भीड़ से बचने के कारण अगले दरवाज़े से बस में चढ़ती है, तो उसे कंडक्टर तक पहुँचने में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। भीड़ भरी बस में महिला वर्ग के साथ बदतमीजी व अन्य प्रकार की समस्याएँ उजागर होती हैं। अतः भीड़ भरी बस का अनुभव अत्यंत बुरा रहा, परंतु भिन्न-भिन्न प्रकार की समस्याओं के बावजूद भी प्रत्येक दिन इन्हीं बसों में सफर करने को मजबूर हैं।

OR

उल्टा पिरामिड सिद्धांत समाचार लेखन का बुनियादी सिद्धांत है। यह समाचार लेखन का सबसे सरल, उपयोगी और व्यावहारिक सिद्धांत है। समाचार लेखन का यह सिद्धांत कथा या कहनी लेखन की प्रक्रिया के ठीक उलट है। इसमें किसी घटना, विचार या समस्या के सबसे महत्वपूर्ण तथ्यों या जानकारी को सबसे पहले बताया जाता है, जबकि कहनी या उपन्यास में क्लाइमेक्स सबसे अंत में आता है। इसे उल्टा पिरामिड इसलिये कहा जाता है क्योंकि इसमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना सबसे पहले आती है जबकि पिरामिड के निचले हिस्से में महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना होती है। इस शैली में पिरामिड को उल्टा कर दिया जाता है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण सूचना पिरामिड के सबसे उपरी हिस्से में होती है आरै घटते हुये क्रम में सबसे कम महत्व की सूचनाये सबसे निचले हिस्से में होती है।

Section C

7. i. प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि कवि दुनिया की नीरसता के विषय में विचार कर अपने हृदय के कोमल भावों के आधार पर एक स्वप्निल संसार की रचना करना चाहता है।
   ii. कवि के हृदय में स्वयं को ही जलाने वाली विरहाग्नि दहक रही है। इस प्रेम की अग्नि को हृदय में प्रज्वलित करने वाला व्यक्ति भी, स्वय कवि ही है।
   iii. कवि ससार रूपी सागर से पार उतरने के लिए स्वयं को सागर की लहरों पर मुक्त भाव से छोड़ कर स्नेह एव प्रेमभाव से निर्मित नाव के द्वारा इस संसार को पार करने का प्रयास करता है। कवि मस्त भाव से रहते हुये संसार का सामना करना चाहता है।

OR

i. प्रकृति एवं शासन की विषमता का सबसे प्रमुख कारण है-रोजी-रोटी का अभाव। इसी अभाव के कारण लोगों में दरिद्रता व्याप्त है। इस दरिद्रता के कारण ही किसान, व्यापारी, भिखारी, चाकर सभी परेशान है। ये आजीविका विहीन

लोग चिंता में डूबे हुए हैं। वे अत्यंत भयातुर होकर एक-दूसरे से कहते हैं कि कहाँ जाएँ, क्या करे?

ii. तुलसीदास जी को इस भयंकर दुरावस्था में दीनबंधु भगवान श्रीराम का भरोसा है। तुलसीदास जी रामभक्त है। उन्हें अपने आराधक राम की शक्ति में पूर्ण विश्वास है। जब मनुष्य के स्तर पर पराजय स्वीकार कर ली जाती है, तो फिर अलौकिक शक्ति के प्रति ही आशा उत्पन्न होती है। तुलसीदास जी को यह विश्वास हो गया कि इस विषम परिस्थिति से उबारने में अब कोई मनुष्य सक्षम नहीं हो सकता। यही कारण है कि भगवान श्रीराम के प्रति अपनी आस्था एवं विश्वास के बल पर वह उनसे इस दुरावस्था को समाप्त करने की प्रार्थना करते हैं।

iii. प्रस्तुत काव्यांश में रावण की तुलना समाज में व्याप्त दरिद्रता से की गई है, क्योंकि इस दरिद्रता रूपी रावण ने पूरे समाज को अपने घातक पंजों में दबोच लिया है, जिससे पूरा समाज अत्यंत व्यथित है।

8. i. शरतकालीन सुबह की उपमा खरगोश की लाल आँखों के समान की गई है क्योंकि जिस प्रकार प्रातःकालीन सूर्य रक्तिम आभा लिए हुए होता है उसी प्रकार खरगोश की आँखे भी लाल होती हैं।

ii. प्रस्तुत अंश में कवि ने मानवीकरण अलंकार का बहुत सुंदर प्रयोग किया है, जो इन पंक्तियों में देखने लायक है; जैसे- 'भादो गया', 'शरद आया, पुलों को पार करते हुए, अपनी नई चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए शरद रूपी बालक का आगमन होता है।

OR

i.
- भाषा मधुर एवं कोमलकांत
- सरल, सुबोध, खड़ी बोली, प्रवाहमय
- मुक्तक छंद
- "तैरती साँझ की -------काया" मानवीकरण अलंकार
- 'आँखें चुराना' मुहावरे का सुंदर प्रयोग
- हौले-हौले- पुनरुक्ति प्रकाश
- मनोरम दृश्य बिंब

  तुकबंदी के कारण गेय

ii.
- आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ते हुए सफेद बगुले काले बादलों के ऊपर साँझ की श्वेत काया के समान प्रतीत
- कवि की आँखों का इस नयनाभिराम दृश्य में उलझना
- संध्या का सुन्दर, सजीव एवं मनोहारी चित्रण

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 60-70 शब्दों में दीजिये:

a. कविता और बच्चे दोनों अपने स्वभाव के अनुसार खेलते हैं। खेल-खेल में वे अपनी सीमा, अपने-परायों का भेद भूल जाते हैं। जिस प्रकार एक शरारती बच्चा किसी की पकड़ में नहीं आता उसी प्रकार कविता में उलझा दी गई बात तमाम कोशिशों के बावजूद समझ की सीमा से परे हो जाती है फिर चाहे उसे समझने के लिए कितने ही प्रयास किए जाये, वह एक शरारती बच्चे की तरह हाथों से फिसल जाती है जिस प्रकार प्रेम, सरलता और भोलेपन से शरारती बच्चों को वश में किया जाता है उसी प्रकार सरलता, प्रेमयुक्त आचरण एवं शब्दों से बिगड़ी बात मनाई भी जा सकती

है।

b. उषाकाल में आकाश का रंग शंख जैसा नीला था, सुबह की नमी के कारण तथा सूर्य की लालिमा बढ़ने के बाद आकाश राख से लीपे चौके जैसा हो गयाजो अभी गीला है। सूर्य की प्रारंभिक किरणों से आकाश की लालिमा ऐसा लगी मानो काली सिल पर थोड़ा केसर डालकर उसे धो दिया गया हो या फिर काली स्लेट पर लाल खड़िया मिट्टी मल दी गई हो। सूर्योदय के बाद आकाश ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे नील स्वच्छ जल में किसी गोरी युवती का प्रतिबिंब झिलमिला रहा हो।

c. दीवाली की शाम को घर स्वच्छ तथा पवित्र बनाया गया है। घर को खूब सजा दिया गया है। माँ बच्चे के लिए चीनी मिट्टी के चमकदार खिलौने लाई है। उस रूपवती के चेहरे पर एक आभा है। वह अपने बच्चे के घरौंदे को सजाती है तथा उसमे एक दीप जलाती है। बच्चा प्रसन्न हो जाता है। अपने बच्चे की प्रसन्नता से ही माँ का चेहरा गर्व से फूला हुआ है।

10. i. आज हम बातें ही करते रहते है कि देश में भ्रष्टाचार बढ़ता ही जा रहा है। हमारी शिकायते तो बड़ी-बड़ी हैं, किंतु व्यक्तिगत रूप से हम देश के लिए कुछ भी नहीं करते हैं।

ii. हमारा एकमात्र लक्ष्य स्वार्थ इसलिए रह गया है क्योंकि आज देशवासी स्वहित को ही सर्वोपरि मानते है। देश के बारे में कोई भी नही सोचता। आज प्रत्येक व्यक्ति आत्मकेंद्रित होने के कारण धन, वैभव तथा मूल्यवान वस्तुएँ पाना चाहता है। अतः स्वार्थ साधन ही उसका एकमात्र लक्ष्य रह गया है।

iii. लेखक कहता है कि हमे अपने स्तर पर यह जाँचना चाहिए कि कहीं हम भ्रष्टाचार के अंग तो नही बन रहे। हम दूसरों से दूसरों के भ्रष्टाचार दूर करने की बातें तो करते है पर स्वयं में हम कभी भी दोष नही निकालते।

OR

i. लेखक को शिरीष के वृक्ष पर पुराने मज़बूत फलों को देखकर यह सब कहना पड़ा। वस्तुतः शिरीष के फल इतने मजबूत होते हैं कि वे अपने स्थान को आसानी से नहीं छोड़ते, नए फूलों के निकल आने के बाद भी वे अपने स्थान पर डटे रहते हैं।

ii. तुलसीदास के कथन का आशय यह है कि इस पृथ्वी पर यह प्रामाणिक है कि जो फलता है, वह झड़ जाता है, बिखर जाता है, टूट जाता है तथा जो जलता है, उसे बुझना ही पड़ता है। तुलसीदास ने अपने इस कथन के माध्यम से इस शाश्वत सच्चाई को उजागर किया है कि जो जन्म लेता है, उसकी मृत्यु निश्चित है, वह नष्ट होता ही है।

iii. "महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं"- पंक्ति से लेखक का आशय यह है कि प्रत्येक जीव समय के साथ-साथ मृत्यु की ओर, बढ़ रहा है। महाकाल अर्थात् मृत्यु उसे अपनी आगोश में लेने के लिए तेजी से बढ़ा चला आ रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि समय व्यतीत होने के साथ-साथ प्रत्येक जीव काल का ग्रास बनने की ओर निरंतर बढ़ रहा है।

11. निम्नलिखित A, B, C प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिये, प्रश्न D अनिवार्य है : (4+4+2)

a. यह निबंध उपभोक्तावाद एवं बाजारवाद की अंतर्वस्तु को समझाने में बेजोड़ है। लेखक बताता है कि बाजार का आकर्षण मानव मन को भटका देता है। वह उसे ऐशोआराम की वस्तुएँ खरीदने की तरह आकर्षित करता है। लेखक ने भगत जी के माध्यम से नियंत्रित खरीददारी का महत्त्व भी प्रतिपादित किया है। बाजार मनुष्य की ज़रूरतें पूरी करें। इसी में उसकी सार्थकता है, अन्यथा यह समाज में ईर्ष्या, तृष्णा, असंतोष, लूटखसोट को बढ़ावा देता है।

b. दोनों जगह के कस्टम अधिकारियों ने सफ़िया और उसकी नमक रूपी सद्भावना का सम्मान किया। उनमें से एक देहली को अपना वतन मानते हैं और दूसरे ढाका को अपना वतन कहते हैं। उन दोनों ने सफ़िया के प्रति पूरा सद्भाव दिखाया, कानून का उल्लंघन करके भी उसे नमक ले जाने दिया। अमृतसर वाले सुनील दास गुप्त तो उसका थैला उठाकर चले और उसके पुल पार करने तक वहीं पर खड़े रहे। उन अधिकारियों ने यह साबित कर दिया कि कोई भी कानून या सरहद प्रेम से ऊपर नहीं है।

c. भक्तिन के आने से लेखिका के खान-पान में बहुत परिवर्तन आ गए। उसे मीठा, घी आदि पसंद था। उसके स्वास्थ्य को लेकर उसके परिवार वाले भी चिंतित रहते थे। घरवालों ने उसके लिए अलग खाने की व्यवस्था कर दी थी। अब वह मीठे व घी से विरक्ति करने लगी थी। यदि लेखिका को कोई असुविधा भी होती थी तो वह उसे भक्तिन को नहीं बताती थी। भक्तिन ने उसे जीवन की सरलता का पाठ पढ़ा दिया।

d. चार्ली चैप्लिन की कला की सार्वभौमिकता के कारणों की जाँच अभी होनी है, परंतु कुछ कारण स्पष्ट हैं, जैसे वे सदैव युवा जैसे दिखते हैं तथा दूसरों को अपने लगते हैं।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 80-100 शब्दों में दीजिये:

a. **यशोधर बाबू के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-**

i. **परंपरावादी**- यशोधर बाबू परंपरावादी हैं। उन्हें पुराने रीति-रिवाज़ अच्छे लगते हैं। वे संयुक्त परिवार के समर्थक हैं। उन्हें पत्नी व बेटी का सँवरना अच्छा नहीं लगता। घर में भौतिक चीजों से उन्हें चिढ़ है।
ii. **असंतुष्ट**- यशोधर असंतुष्ट व्यक्तित्व के हैं। उन्हें अपनी संतानों की विचारधारा पसंद नहीं। वे घर से बाहर जान-बूझकर रहते हैं। उन्हें बेटों का व्यवहार व बेटी का पहनावा अच्छा नहीं लगता। घर में उनसे कोई राय नहीं लेता।
iii. **दुविधाग्रस्त चरित्रनायक** - यशोधर कहानी के नायक हैं। वे सेक्शन अफसर हैं, परंतु नियमों से बँधे हुए वस्तुतः वे नए परिवेश में नहीं ढल पा रहे हैं। वे नए परिवेश को ग्रहण नहीं कर सकते, तथा पुराने संस्कारों को छोड़ नहीं सकते।

b. यशोधर बाबू बचपन में ही माता-पिता के देहांत हो जाने की वजह से जिम्मेदारियों के बोझ से लद गए थे। वे सदैव पुराने ख्यालों वाले लोगों के बीच रहे, पले, बढ़े। यशोधर बाबू अपने आदर्श घोर संस्कारी किशनदा से अधिक प्रभावित हैं और आधुनिक परिवेश में बदलते हुए जीवन-मूल्यों और संस्कारों के विरूद्ध हैं। अतः वे उन परंपराओं को चाह कर भी छोड़ नहीं पाये। इन्हीं सब कारणों से परिवार के सदस्यों से उनका मतभेद बना रहता है; जबकि उनकी पत्नी अपने बच्चों के साथ खड़ी दिखाई देती है। विवाह के बाद उसे संयुक्त परिवार के कठोर नियमों का निर्वाह करना पड़ा

इसलिए वह अपने बच्चों के आधुनिक दृष्टिकोण से जल्दी ही प्रभावित हो गई। वे बेटी के कहे अनुसार नए कपड़े पहनती हैं और बेटों के किसी मामले में दखल नहीं देती। यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ परिवर्तित हो जाती है, लेकिन यशोधर बाबू अभी भी किशनदा के संस्कारों और परंपराओं से चिपके हुए हैं। वे बदलते समय को समझते तो हैं किन्तु पूरे मन से स्वीकार न कर पाने के कारण असफल रहते हैं।

c. राव साहब के दबाव के कारण लेखक को दोबारा पढ़ने की इजाजत मिली। वह स्कूल पहुँचा, परंतु वहाँ उसकी गली के दो लड़कों के अलावा सब अपरिचित थे। लेखक जिन्हें अपने से कम अकल का समझता था, अब उन्हीं के साथ बैठने के लिए विवश था। उसके कपड़े भी कक्षा के अनुरूप नहीं थे। उसे अपने अध्यापक का भी नहीं पता था। वह लट्ठे के बने थैले में पुरानी किताबें व कापियाँ भरकर लाया था। वह बालगुड़ी की लाल माटी के रंग में मटमैली धोती और गमछा पहनकर आया था। शरारती लड़के ने उसका मज़ाक उड़ाया तथा उसका गमछा छीनकर अपने सिर पर लपेट कर मास्टर की नकल करने लगा। उसने गमछा टेबल पर रख दिया, जिसके कारण मास्टर का गुस्सा भी सहन करना पड़ा। घर जाते समय वह सोच रहा था कि लड़के उसकी खिल्ली उड़ाते हैं, धोती खींचते हैं, गमछा खींचते हैं, ऐसे में वह कैसे पढ़ेगा? इससे अच्छा है कि मैं पाठशाला न जाऊँ और खेत में ही काम करता रहूँ। सवेरे उठते ही वह फिर पाठशाला चला गया। धीरे धीरे उसका आत्मविश्वास और सहपाठियों से परिचय बढ़ गया।

d. सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों में उत्कृष्ट कलात्मक अभिरुचि थी। यहाँ के लोगों के दैनिक प्रयोग की वस्तुओं में भी कलात्मकता दिखाई देती है। यहाँ की वास्तुकला तथा नियोजन, धातु व पत्थर की मूर्तियाँ, केश-विन्यास, आभूषण, बर्तनों पर उभारे गए चित्र, मुहरों पर उत्कीर्ण आकृतियाँ, खिलौने, सुघड़ लिपि आदि सिंधु घाटी के लोगो के सौंदर्यबोध और कलात्मक रुचि को प्रकट करती हैं। वस्तुओं के प्राकृतिक या नैसर्गिक सौंदर्य को अधिक महत्त्व दिया गया था। सामूहिकता एवं सामाजिकता का पक्ष इस सभ्यता के लोगों के लिए प्राथमिकता थी। इस सभ्यता में राजमहलों, मंदिरों, समाधियों के अवशेष नहीं मिलते। ऐसी कोई मूर्ति उपलब्ध नहीं हुई, जिसमें विशालता एवं भव्यता व्याप्त हो या दिखावे का तेवर हो। इसका आशय यह है कि यह सभ्यता राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाजपोषित थी।

e. मुअनजो-दड़ो की सड़कों और गलियों का विस्तार खंडहरों को देखकर किया जा सकता है। यहाँ हर सड़क सीधी है या फिर आड़ी। चबूतरे के पीछे 'गढ़ उच्च वर्ग की बस्ती, महाकुंड, स्नानागार, ढकी नालियाँ, अन्न का कोठार, सभा भवन, घरों की बनावट, भव्य राजप्रासाद, समाधियाँ आदि संरचनाएँ ऐसे सुव्यवस्थित हैं कि कहा जा सकता है कि शहर नियोजन से लेकर सामाजिक संबंधो तक में इसकी कोई तुलना नहीं है। वर्तमान की सेक्टर-मार्का कॉलोनियों में आड़ा-सीधा नियोजन बहुत मिलता है जो रहन-सहन को नीरस बनाता है तथा इसमें नियोजन के नाम पर हमें अराजकता ज्यादा हाथ लगती है। अतः कहा जा सकता है की आज की सेक्टर-मार्का कॉलोनियां इनके सामने बिलकुल फीकी हैं।